छोटी देसी मछलियों का पालन

संकलन: रुमप सामंत, नरेंद्र कुमार वर्मा, ममता सिंह
संगीता कुमारी

प्रकाशन: मात्स्यिकी महाविद्यालय, अर्राबाड़ी
किशनगंज, बिहार -855107
(बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना)

संपर्क: 8655132365/7523085610

छोटी देसी मछलियों का पालन

प्राकृतिक जलभूमि में कुछ ऐसी मछलियां पाई जाती हैं जोअपने जीवनकाल मेंअधिकतम 25 सेंटीमीटर तक ही बढ़ पाती हैं। इन मछलियों को छोटी मछली कहां जाता है। भारत में लगभग 450 प्रजाति की छोटी मछलियां पाई जाती हैं।इनमें से बिहार में लगभग 40 प्रजाति की छोटी मछलियां मिलती हैं। इनमें से अधिकतम छोटी मछलियों काअस्तित्व खतरे में है तथा प्रकृति में इनकी संख्या दिन-ब-दिन कम होती जा रही है, इसलिए छोटी मछलियों को बचाने के लिए और उनके प्रबंधन के लिए तालाब में छोटी मछलियों का पालन बहुत जरूरी है।

छोटी मछलियों का महत्त्व

छोटी मछलियों में मनुष्य के लिए जरूरी एमिनो एसिड मिलते हैं, जो शरीर में कोलेस्ट्रोल की मात्रा घटाने में मदद करतेहैं। छोटी मछलियों में लगभग 70% जल, 20% प्रोटीन, 8% चर्बी, 0.15% कैल्शियम, 0.25% फास्फोरस एवं 0.01% विटामिन पाया जाता हैं। छोटी मछलियां आसानी से पचती हैं और इसमें उच्च गुणवत्ता युक्त प्रोटीन पाया जाता हैं। इन मछलियों में बहुत ज्यादा कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा और आयोडीन जैसे खनिज मिलते हैं जो कि शरीर की वृद्धि एवं रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ाते हैं। गर्भावस्था के समय बच्चे के उचित विकास के लिए छोटी मछलियां उत्तम हैं। छोटी मछलियों में ओमेगा -3 फैटी एसिड पाया जाता हैं, जो फेफड़ों के **संक्रमण** को कम करने **में** मदद करते **हैं**।

छोटी मछलियों का पालन क्यों करें ?

- जिस प्रकार से छोटी मछलियों काअधिक घनत्व में मोनोकल्चर लाभदायकहै, वैसे ही दूसरी कार्प मछलियों के साथ इनका पॉलिकल्चर भी फायदेमंद होता है।
- छोटी मछलियां प्राकृतिक रूप से प्रजनन करती हैं तथा किसान को अलग से बार-बार मछलियां छोड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती।
- देसी मछलियों के संरक्षण के लिए छोटे आकार वाली मछलियों का पालन बहुत जरूरी है।
- छोटे-बड़े,कम या ज्यादा गहरे किसी भी प्रकार के तालाब मेंछोटी मछलियों का पालन सरलतापूर्वक किया जा सकता है ।
- छोटी मछलियों का पालन समय कम होता हैं तथा जीरा छोड़ने के 3 से 4 महीने बाद ही मछलियां बाजार में बेचने योग्य हो जाती हैं।

पलान योग्य कुछ देसी प्रजातियां

पुंटियस सोफोर, लेबीओ बाटा, सिरहिनस रेबा, मिस्टस विटेटस, मिस्टस गुलियो, ओमपोक पाबदा, अनाबस टेस्टूडिनीअस, मैक्रोग्नाथस पैन्कलस, कोलिसा फासिआटा एवं एंब्लीफेरीनगोडोन मोला भारत में पायी जाने वाली पालनयोग्य देसी प्रजातियां है

पालन तकनीक

- तालाब तैयार करने के लिए तालाब में रहने वाली हानिकारक मछलियों तथा कीटो का उन्मूलन जाल चला कर या फिर तालाब को सुखा कर किया जाता है।
- यदि तलाब में ज्यादा खरपतवार है तो उसे हाथ से या रसायनों के प्रयोग से नष्ट कर देना चाहिए। उसकेअगले दिन तालाब में 200 - 300 किलो / हेक्टेयर चूने का प्रयोग करना चाहिए।
- चूना देने के 3- 4 दिन बाद 750-1000 किलो / हेक्टेयर गोबर, 20-25 किलो / हेक्टेयर यूरियाऔर 30 किलो / हेक्टेयर सिंगल सुपर फास्फेट एक साथ मिलाकर सारे तालाब में छिड़क देना चाहिए।
- इसके 3-4 दिन बाद जब पानी का रंग हल्का हरा या फिर हल्का ब भूरा हो जाए तब मछलियों को तालाब में डालना चाहिए। मोला और बाटा के मिश्रित पालन के लिए प्रति हेक्टेयर में 25,000-30,000 बड़े साइज का मोलाऔर 20,000 -25,000 बाटा के अंगुलीकाओ को छोड़ना चाहिए।
- प्राकृतिक भोजन के साथ कृत्रिम भोजन के लिए चावल की भूसी और सरसों की खली समान अनुपात में भिगो कर मछली के शारीरिक वजन का 5-7 % के हिसाब से प्रतिदिन सुबह और शाम खाना देना चाहिए। फीडिंग ट्रे में खाना देने से खाने की बर्बादी कम होती है और पानी की गुणवत्ता अच्छी रहती है। कृत्रिम भोजन के साथ साथ नियमित तौर पर मछली का स्वास्थ्य भी देखना चाहिए।
- मछली छोड़ने के 15 दिन के बाद से हर महीने में 2 बार प्रति हेक्टेयर 500-700 किलो गोबर, 20-25 किलो यूरियाऔर 15-20 किलो सिंगल सुपर फास्फेट एक साथ मिला कर तलब मेंप्रयोग करना चाहिए।बारिशऔर ठंडी के मौसम में उर्वरक का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- वयस्क मोला मछली तलाब में छोड़ने के 2-3 हफ्ते के बाद से ही बच्चे देने लगती हैं। मोला मछली साल में 2-3 बार बच्चे देती है। बच्चे देने के एक महीने बाद से ही यह मछली बाजार में बेचने योग्य हो जाती है एवं दूसरी मछलियों जैसे कतला, रोहू, तथा बाटा के साथ इस मछली का पालन बहुत लाभदायक है।

वैज्ञानिक नाम: लेबीओ बाटा

वैज्ञानिक नाम: सिरहिनस रेबा

वैज्ञानिक नाम: कोलिसा फासिआटा

वैज्ञानिक नाम: ओमपोक पाबदा

वैज्ञानिक नाम: एंब्लीफेरीनगोडोन मोला

वैज्ञानिक नाम: पुंटियस सोफोर